International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिवार पर महिला सशक्तिकरण का प्रभाव

डॉ उषा किरण
रिसर्च फेलो
बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर

प्रस्तावना .

भारतीय समाज पर बहुत तेजी से आधुनिकता हावी हो रहा है जिससे परिवार का पारंपरिक स्वरूप छिन्न.भिन्न होता जा रहा है। भारत में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार की परंपरा की अपनी विशिष्टता रही है जो सिर्फ भारतीय समाज में ही देखने को मिलती है अन्यत्र नहीं।जहाँ संयुक्त परिवार कई पीढ़ियों के पोषण और संरक्षण के दायित्व का वहन करता रहा है वहीं नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के अनुभव और ज्ञान से लाभान्वित भी करता रहा है। संयुक्त परिवार में वरिष्ठ नागरिकों का स्थान आदर और सम्मान का होने के कारण उनका ही प्रभुत्व परिवार पर बना रहता है इसलिए परिवार में अनुशासनए आदर और प्रेम का भाव प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है ।

समय बदला और भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था का स्वरूप भी। औद्योगिकीकरणए शहरीकरण और वैश्वीकरण के साथ.साथ महिला सशक्तिकरण ने भी संयुक्त परिवार की संरचना को चरमरा कर रख दिया। जहाँ तक हम जानते हैं कि परिवार की व्यवस्था स्त्री.पुरुष की सहभागिता पर आधारित होती है और इनसे ही परिवार का निर्माण होता है। प्राचीन काल से ही स्त्री पुरुष के कार्य क्षेत्र का बंटवारा लिंग के आधार पर किया गया था। पुरुष घर के बाहर की जिम्मेदारियाँ पूरी करते रहे हैं तो स्त्रियां घर के भीतर की। किंतु परिवर्तन के प्रभाव से से परिवार भी अछूता नहीं रहा।

भारतीय समाज पर आधुनिकता के प्रभाव स्वरूप स्त्री शिक्षा में तीव्र गति से जागरूकता आई जिससे लोग जागरूक हुए और परिवार में लिंग भेद के भेद.भाव में भारी गिरावट आई जिस कारण बेटियों को भी बेटों के बराबर शिक्षा प्रदान किया जाने लगा है। आज स्त्रियों में भी स्वयं के प्रति नवीन दृष्टिकोण विकसित हुआ है जिससे वे नित्य नए क्षेत्र में बड़े आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ा रही हैं और अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर रही हैं। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ स्त्रियों के कदम नहीं पहुंच पाये हैं। जहाँ यह परिवर्तन स्त्री विमर्श के लिए शुभ संकेत है वहीं परिवार की केंद्र बिंदु मानी जाने वाली स्त्रियों के शिक्षित होने और उनके भिन्न भिन्न क्षेत्रों में जाकर नौकरी करने की प्रवृत्ति ने परिवार के स्वरूप को ही बदल कर रख दिया है।

संयुक्त परिवार बिखर कर एकल परिवार के रूप में गठित हो गया है। कामकाजी स्त्रियों को कभी.कभी अकेले हॉस्टल या किराए के घर में रहने की भी मजबूरी होती हैए ऐसे में बच्चों को भी अपने से दूर स्कूल के हॉस्टल में रखने की मजबूरी होती है या कहें कि कामकाजी दंपतियों का स्टेटस होता है जिससे बच्चे परिवार से दूर रहने को विवश होते हैं।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महिला सशक्तिकरण के फलस्वरूप परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव .

महिला सशक्तिकरण के फलस्वरूप परिवार की संरचना में काफी कुछ बदलाव आया है। परिवार का आकार छोटा और आत्मकेंद्रित हो गया है और भी कई तरह के बदलाव हुए हैं जिसे हम निम्न बिंदुओं में निरूपित कर सकते हैं .

1)आर्थिक सुदृढ़ता .

इस बदलते युग में परिवार का आकार छोटा हुआ है। इस बदलते युग में हर महिला यह चाहती है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो अपनी क्षमताओं का उपयोग करे। ऐसे में उनका किसी न किसी सेक्टर में जाकर कार्य करना परिवार को एक तरह से आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करता है। जब पति.पत्नी दोनों कामकाजी होते हैं तब परिवार को चलाना काफी आसान होता है। बच्चों की अच्छी शिक्षा और अच्छी परवरिश होने के कारण वे अच्छी जिंदगी जीते हैं। उन्हें अपने लिए सभी सुख सुविधाएं जुटा पाना मुश्किल नहीं होता है। तरह इस तरह उनकी जीवन प्रत्याशा में काफी सुधार आता है।

2.) छोटा आकार .

बदलते समय में परिवार का आकार छोटा हो रहा है। संयुक्त परिवार की संरचना में बदलाव आया है। लोग व्यक्तिवादी हो गए हैं। स्वार्थपरता और व्यक्ति की स्वतंत्र आकांक्षा ने संयुक्त परिवार को एकल परिवार में बदल दिया है इसका एक कारण यह है कि लोग नौकरी करने के लिए शहर की ओर जाते हैं या शहर में नौकरी करते हैं तो वे वही अपना परिवार बसा लेते हैं। महिलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी करने के कारण उन्हें अपने परिवार से अलग रहना पड़ता है जिस कारण एकाकी परिवार का जन्म हुआ है। जिसमें पति.पत्नी और उनके बच्चे शामिल होते हैं।

3 पारिवारिक मूल्यों का ह्रास .

पहले परिवार में कई पीढ़ियों का जमावड़ा होता था। जहाँ बच्चे अपने दादा.दादी और नाना.नानी की छत्रछाया में नैतिक मूल्यों को ग्रहण करते थे किंतु आज परिवार में बड़े बुजुर्गों के लिए स्थान नहीं बचा तो बच्चे मोबाइल और टीवी से प्रभावित होते हैं और उन्हीं के रहन.सहन की नकल करते हैं।आभासी दुनिया का आकर्षण इतना होता है कि वे नायकों को अपना आदर्श बनाते हैं और उनकी जीवन शैली को अपनाने लगते हैं। कभी.कभी उनमें गलत प्रवृत्तियाँ भी विकसित हो जाती हैं और वे गलत मार्ग को चुन लेते हैं।

4असुरक्षा की भावना .

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पहले परिवार में अधिक सदस्य होने के कारण परिवार का कोई सदस्य स्वयं को असुरक्षित और अकेला महसूस नहीं करता था। अगर परिवार में कोई बेरोजगार भी होता था तो उनकी जिंदगी कभी असुरक्षित नहीं लगती थी। उनकी परवरिश परिवार में सहज ढंग से हो जाता था किंतु अब ऐसा नहीं है। आज परिवार का हर सदस्य अकेला हो गया है। बच्चे विभिन्न अपराध की गिरफ्त में आ गए हैं। माँ के कामकाजी होने के कारण परिवार पर इसका प्रभाव अच्छा नहीं है। सदस्यों के बीच उनका अकेलापन हावी रहता है। पति.पत्नी काम पर चले जाते हैं और घर में छोटे नन्हें बच्चे अकेले आया की देखभाल में रहते हैं या अकेले रहते हैं या फिर भी कई बार अपराध के शिकार भी हो जाते हैं। एकल परिवार में हमेशा असुरक्षा की भावना बनी रहती है।

5) स्वच्छंदता .

स्त्रियाँ विभिन्न विभागों में काम कर रही हैं तब कार्य के घंटे और समय में विभिन्न विरोधाभास उभर कर सामने आ रहा है जिसके फलस्वरूप नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है। अनैतिकता की चादर पाँव पसार रही है जिसके फलस्वरूप लिव इन रिलेशनशिप और विवाहेतर संबंधए यौन अपराधए तलाक इत्यादि समस्यायें समाज में चुनौतियों के रूप में नित्य सामने आ कर खड़ी हो रही हैं। आज कामकाजी विवाहित स्त्रियां भी घर से दूर हैं। वे हॉस्टल में शरण ले रही हैं या किराये के मकान में।

6 स्त्रियों की बदलती पारंपरिक छवि.

महिला सशक्तिकरण से बदला स्त्रियों का स्वरूप समाज में प्रतिदिन दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत में एक ओर महिलाओं का संस्कारी व्यक्तित्व और स्त्रियोचित नैसर्गिक गुणए ममताए त्याग या अन्य भावना प्रधान संस्कार है तो दूसरी ओर पुरातन संस्कारों से आक्रांत मानसिकता से मुक्त होकर नए मूल्यों को स्वीकारने और स्वयं को उस में ढालने की तीव्र अकुलाहट दृष्टिगत हो रही है। नारी को उसके स्वयं के प्रति चेतना जागृत होने से उसे खोखले मान्यताओं और थोपी गई अपेक्षाओं के प्रति विद्रोह की राह पर ला खड़ा कर दिया हैए इसके फलस्वरूप वह स्वतंत्र रूप से स्वयं के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए आतुर हुई दिख रही है।

परम्परागत परिवार और एकल परिवार में महिलाओं की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन .

आज के बदलते प्रगतिशील युग में नारी की नव चेतना स्त्री.पुरुष संबंधों और सामाजिक सामंजस्य में उनकी भूमिका प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही है जो उनकी नई भूमिका का प्रमाणीकरण है। हमारे समाज में स्त्री श्रम की आवश्यकता भी महसूस की जा रही है। परिवार की केंद्र बिंदु नारी बखूबी अपने परिवार और कार्य क्षेत्रों की भूमिकाओं के बीच सामंजस्य बैठाती अपनी विविधता भरी क्षमताओं से परिचय कराती दिख रही है। वह अपनी परिभाषा स्वयं गढ रही है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पारंपरिक परिवार में स्त्री की भूमिका .

भारतीय परिपेक्ष में परिवार समाज की प्रथम इकाई के रूप में स्थापित है। परिवार का पारंपरिक स्वरूप संयुक्त परिवार ही है। जिन भावनाओं और मूल्यों पर संयुक्त परिवार का अस्तित्व टिका हुआ था उनमें अब ह्रास होने लगा है। परिवार को संयुक्त रूप में संरक्षित होने वाले तत्वों स्नेहए सौहार्दपूर्ण वातावरणए त्यागए सम्मान और कर्तव्य आदि मानवीय भावनाओं की उपेक्षा हो रही है और उनके स्थान पर स्वार्थए व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा आदि ने एकल परिवार को जन्म दिया है। परिवार के बदलते स्वरूप के लिए कुछ हद तक स्त्रियों में आई नव चेतना की भावना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे घर की देहरी लाँघ विभिन्न पदों पर आसीन हो रही हैं। कभी वह भी समय था कि परिवार में स्त्रियों की स्थिति बच्चों के जन्म देनेए परिचारिका का दायित्व निभाने और पुरुष के काम तुष्टि तक ही सीमित थी। घुंघट में रहने वाली स्त्रियों को भला यह कहाँ मालूम था कि इससे इतर भी उनकी कुछ और भी भूमिका हो सकती है। घर की दहलीज से बाहर भी एक दुनिया है जो उनके पदार्पण की प्रतीक्षा कर रही है। जब यही नव चेतना उनके अंदर आई और उन्होंने घूंघट सरकाकर बाहरी दुनिया में झांका तो उनकी आँखों में सपनों की सप्तरंगी डोर भर गई जिसे पूरी करने के लिए वह बड़े विश्वास के साथ आगे बढ़ रही है।

प्राचीन काल से ही परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिए के रूप में स्त्री और पुरुष परिभाषित होते रहे हैं। पर वास्तविकता में ऐसा कुछ नहीं था पुरुष स्त्रियों को अपने पैरों की जूती भर समझते थे और उनके बारे में निंदनीय कहावते विकसित कर रखी थीए जब महिलाओं ने अपनी क्षमताओं को पहचाना और पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर समानांतर उठ खड़ी हुई तो उनका यह बदला स्वरूप समाज में मुश्किल से हजम हुआ। पुरुष का दोहरा व्यक्तित्व और नैतिक मानदंड और स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त करने की उत्सुकता ने परिवार के पारंपरिक स्वरूप पर कुठाराघात किया है।

एकाकी परिवार में नारी की भूमिका

आज नारी अपने बदले स्वरूप में घर और बाहर दोनों के बीच सामंजस्य बैठा कर रखती है और अपनी क्षमताओं के बल हर क्षेत्र में अपने अस्तित्व का बोध कराती आत्मविश्वास के साथ खड़ी दिखती है। समाज में जहां महिलाएं सशक्त हुई हैं वहीं दूसरी ओर परिवार में विघटन की स्थिति से भी इनकार नहीं किया जा सकता किंतु इसके लिए सिर्फ महिलाएं ही उत्तरदाई नहीं हो सकती हैं। आज परिवार विघटन के कगार पर है इसलिये कि स्त्री और पुरुष दोनों कामकाजी हैं। दोनों स्वच्छता को पसंद करते हैं। उनके बीच अहम का टकराव होने से बहुत हद तक परिवार प्रभावित होता है। अनेक अनैतिक संबंध पनप रहे हैं।आज जब महिलायें अपने परिवार और बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाते पातीं। जो संस्कार और मूल्य दादीए नानी बच्चों में डालती थीं उसमें आज कमी आ गई है।एकल परिवार में उसका अभाव हो गया है। वृद्ध वृद्धाश्रम पहुंच रहे हैं और बच्चे कुंठा अकेलापन और अपराध से रूबरू हो रहे हैं।

हम निम्न बिंदुओं में यथास्थिति को का अवलोकन कर सकते हैं .

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिवार के बदलते स्वरूप से उत्पन्न चुनौतियाँ.

1 पुरुष सत्तात्मकता को चुनौती

2 स्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रधानता

3अस्तित्व के लिए संघर्ष

4 विवाह संस्था में अविश्वास

5 टूटते नैतिक मूल्य और स्वच्छंदता

6 कामेच्छा पूर्ति की धारणा की पुष्टि

7 अकेलापनए कुंठा और अवसाद का जन्म

8 सह सम्बन्धों में कृत्रिमता

9 अति महत्वकांक्षा और

10 तीव्र आधुनिकीकरण

निष्कर्ष .

जब हम महिला सशक्तिकरण का परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि महिला सशक्तिकरण का व्यापक प्रभाव परिवार की संरचना पर पड़ा है। हम पौराणिक गाथाओं में स्त्रियों के जिस रूप के दर्शन करते हैं आज वहीं रुप सशक्त होकर फिर से उभर रहा है भले ही भूमिकाएं बदल गई हैं। स्त्रियां अपनी क्षमताओं का लोहा हर क्षेत्र में मनवा रही हैं। प्राचीनकाल में महिलाएं शस्त्र विद्याए शास्त्र विद्याए युद्ध विद्या इत्यादि तमाम विधाओं में निपुण होती थीं। उनका मनोबल उच्च कोटि का था। समाज में भी वंदनीय थी। सर्वत्र उनका सम्मान किया जाता था किंतु मध्य युग में जब मुगलों के आक्रमण के बाद उनकी दशा में गिरावट आई और परिस्थिति वश वे अन्य कुरीतियों की बेड़ियों में जकड़ती चली गई। आधुनिक युग में समाज सुधारकों की दृष्टि स्त्री दशा की ओर गई तब समाज में जागरूकता आई। तब से आज तक निरंतर महिलाएं प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। आज महिलाएं घर की चारदीवारी को लांग कर परिवार की जिम्मेदारियों के साथ.साथ बाहरी दुनिया की जिम्मेदारियों को भी अपने कांधे उठाना शुरू किया तब परिवार के स्वरूप में परिवर्तन आना लाजमी था। जैसा कि हम जानते हैं कि परिवर्तन सदा सकारात्मक ही नहीं होता बल्कि उसमें नकारात्मकता के गुण भी मौजूद होते हैं। परिवार इससे अछूता नहीं है। परिवार का स्वरूप बदला है। प्राथमिकताएं बदली हैं। मूल्य बदले हैं और अपेक्षाएं भी। किंतु हम कह सकते हैं कि आज की नारी अपने बदले स्वरूप और अपनी बढ़ती भूमिका को लेकर काफी सचेत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 डॉ ललिता सोलंकी . महिला आर्थिक सशक्तिकरण एवं पंचायती राज . क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी नई दिल्ली 110015

2 नीरा देसाई और मैत्रेई कृष्ण राज 1987 . वूमेन एंड सोसाइटी इन इंडिया

3 राजकिशोर . स्त्री परंपरा और आधुनिकता . वाणी प्रकाशन

4 गुप्ता सरोज कुमार . भारतीय नारी कल आज और कल . प्रकाशन संस्थान

5 राजकिशोर . स्त्री के लिए जगह . वाणी प्रकाशन